शोध सारांश

कुरु प्रदेश में बौद्ध धम्म का प्रवेश एवं ऐतिहासिक महत्व

भगवान बुद्ध के समय में भारत को 'जम्बूद्वीप' के नाम से जाना जाता था। यह छोटे-बड़े सोलह महाजनपदों में विभक्त था। इनमें से 'कुरु' एक महत्वूर्ण जनपद था। वर्तमान में इसके भाग हरियाणा तथा पश्चिम उत्तर प्रदेश के अंतर्गत आते हैं। *कुरुधम्मजातक* में वर्णन मिलता है कि यहाँ के लोग *'कुरुधम्म'* अर्थात *'पंचशील'* का बड़ी कड़ाई से पालन करते थे तथा दूर-दूर तक अपने ज्ञान एवं उदारता के लिए बहुत प्रतिष्ठित थे। इनकी ऐसी ख्याति देखकर दूसरे राष्ट्रों के लोग उनसे धम्म सीखने आते थे। स्वयं भगवान बुद्ध ने यहाँ के लोगों को बौद्ध धम्म में परिवर्तित करने के लिए बहुत बौद्धिक एवं सारगर्भित उपदेश दिये थे।

यह लघु शोध चार अध्यायों में विभक्त है। इसके प्रथम अध्याय 'कुरु प्रदेश और बौद्ध धम्म' में सर्वप्रथम बुद्धकालीन सोलह महजनपदों का सामान्य परिचय देते हुये कुरु प्रदेश की भौगोलिक पृष्ठभूमि पर विस्तार से वर्णन किया गया है तथा कुरु प्रदेश में बौद्ध धम्म का प्रवेश के बारे में बताया गया है। *पालि तिपिटक* में वर्णन मिलता है कि संबोधि प्राप्ति के ग्यारह वर्ष पश्चात (ई. पू. 517) स्वयं भगवान बुद्ध भिक्षु संघ के साथ चारिका करते हुये कुरु प्रदेश आये थे। उस समय यहाँ *'कम्मासधम्म'* तथा *'थुल्लकोट्ठित'* दो बहुत प्रसिद्ध नगर थे। जब भगवान बुद्ध कुरु प्रदेश आते थे तब अक्सर कम्मासधम्म के समीप एक वन खण्ड में ठहरते थे। अब यह 'कमासपुर' नामक गाँव से जाना जाता है तथा थुल्लकोट्ठित के बारे में विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत हैं- डी. सी. अहीर ने थुल्लकोट्ठित (ठुलकोठित) की पहचान 'स्थानेश्वर' से की है तथा भारद्वाज आधुनिक कुरुक्षेत्र के 'ठोल' और 'कुरडी' गाँव को मानते हैं।

द्वितीय अध्याय 'कुरु प्रदेश में भगवान बुद्ध के उपदेश' के बारे में है। इसमें भगवान बुद्ध द्वारा कुरु प्रदेश में उपदेशित सुत्तों को अलग-अलग ग्रन्थों के माध्यम से एकत्रित कर उनके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाने का प्रयास किया गया है। इसके अध्ययन से पता चलता है कि भगवान बुद्ध ने अपने जीवनकाल में कुरु प्रदेश की चार बार यात्रा करते हुये छह महत्वपूर्ण सुत्तों के उपदेश दिये थे- *महासतिपट्ठानसुत्त, आनेञ्जसप्पायसुत्त, महानिदानसुत्त, मागण्डियसुत्त, सम्मससुत्त तथा रट्ठपालसुत्त*। इनमें से क्रमश: पाँच उपदेश *'कम्मासधम्म'* तथा एक *'थुल्लकोट्ठित'* में दिया था। ऐतिहासिक दृष्टि से इन सुत्तों का बहुत महत्व है इनमें बुद्धकालीन समाज की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, भौगोलिक तथा सांस्कृतिक स्थिति की

विस्तृत जानकारी मिलती है। इसके अतिरिक्त भगवान बुद्ध के आगमन, उनके समकालीन प्रसिद्ध राजाओं, प्रमुख भिक्षुओं, व्यापार मार्ग एवं वाणिज्य केन्द्र, प्राचीन नगर, तथा दूर-दूर तक फैले राजपथों आदि के बारे में जानकारी मिलती है। भगवान बुद्ध के समय यहाँ पर कौरव्य नामक राजा शासन करते थे। कुरु प्रदेश के निवासी स्थविर रट्ठपाल, स्थविर मागण्डिय, थेरी नन्दुत्तरा और थेरी मित्ताकाली आदि ने बौद्ध संघ में प्रव्रज्या ग्रहण कर अर्हंत-फल प्राप्त किया था। भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्य स्थविर आनन्द, स्थविर सारिपुत्त, स्थविर मोग्गल्लान तथा बुद्धकालीन प्रसिद्ध वैद्य जीवक आदि ने भी कुरु प्रदेश का भ्रमण करते हुये बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार किया था। जिसके फलस्वरूप यहाँ पर बौद्ध काल में बौद्ध धम्म बहुत तेजी से विकसित हुआ।

इन उपदेशों की महत्ता तब और भी बढ़ जाती है, जब यह धम्म, दर्शन और विज्ञान से जुड़कर मनुष्य के जीवन को सजता एवं सँवारता है। उसे दुःख, परेशानी, पीड़ा, चिन्ता एवं तृष्णा आदि से मुक्त होने के लिए 'परम सुख निर्वाण' का मार्ग प्रदर्शित करता है।

तृतीय अध्याय 'कुरु प्रदेश के प्राचीन बौद्ध अवशेषों का ऐतिहासिक महत्व' में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा द्वारा कारवाई गई खुदाई से प्राप्त हरियाणा के चार प्राचीन बौद्ध स्थलों (आदिबद्री बौद्ध स्तूप एवं विहार, चनेटी बौद्ध स्तूप, अग्रोहा बौद्ध स्तूप, बौद्ध स्तूप कुरुक्षेत्र) के साथ-साथ आधुनिक धम्मपट्ठान पगोडा कम्मासधम्म को भी सम्मिलित किया गया है। इन स्थलों के तथ्यों का अध्ययन करने से पता चलता है कि ये अवशेष स्थापत्य एवं कला की दृष्टि के साथ-साथ ऐतिहासिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। इनकी प्राचीनता के प्रमाण हमारे समक्ष इस बात को उजागर करते हैं कि आज से लगभग 2300 वर्ष पहले सम्पूर्ण हरियाणा में बौद्ध धम्म फैल चुका था। चीनी यात्री युवान च्वांग के यात्रा विवरण में उल्लेख मिलता है कि उस समय यहाँ के बौद्ध विहारों में सैकड़ों-हजारों बौद्ध भिक्षु निवास करते थे। इससे हम यह अनुमान लगा सकते है कि सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल (सातवीं शती) तक बौद्ध धम्म बहुत अच्छी स्थिति में विद्यमान था, लेकिन इसके बाद में हिन्दू धर्म के बढ़ते प्रभाव और बाह्य मुस्लिम आक्रमणों के कारण 12 वीं, 13वीं सताब्दी के अन्त तक यहाँ के बौद्ध विहारों, स्तूपों, तथा बुद्ध मूर्तियों को तोड़-फोड़ कर ध्वस्त कर दिया गया तथा बौद्ध भिक्षुओं की हत्या कर दी गई। इसके अतिरिक्त जो थोड़े-बहुत बौद्ध भिक्षु बचे थे, वे यह स्थान छोड़कर हिमालय की ओर जाकर बस गए। जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ से बौद्ध धम्म का धीरे-धीरे पतन हो गया।

चतुर्थ अध्याय में 'हरियाणा में बौद्ध धम्म की वर्तमान स्थिति' का अध्ययन किया गया है। आधुनिक हरियाणा में 'बौद्ध धम्मक्रांति' की शुरुआत तब से हुई, जब बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को नागपूर में स्थित 'दीक्षा भूमि' पर पाँच लाख अनुयायियों के साथ हिन्दू धर्म को त्याग कर मानवतावादी बौद्ध धम्म को अपनाया था। इस धम्मक्रांति का प्रभाव भारत के अन्य राज्यों की तरह हरियाणा के बहुजन समाज पर भी थोड़ा-बहुत दिखाई देने लगा है। भारत सरकार द्वारा जारी सन् 2011 के धार्मिक जनगणना के आंकडों के अनुसार यहाँ पर बौद्धों की आबादी कुल 7,514 है।

अतः उपरोक्त विवरण से प्रमाणित होता है कि कुरु प्रदेश बौद्ध धम्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। यहाँ पर भगवान बुद्ध द्वारा दिये गए उपदेश तथा पुरातत्व उत्खन्न से प्राप्त बौद्ध अवशेष इस बात को प्रमाणित करते हैं कि यहाँ पर ई. पू. छठी शताब्दी से लेकर बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी तक बौद्ध धम्म विद्यमान था। वर्तमान में यहाँ बौद्ध धम्म को मानने वालों की संख्या 0.02 प्रतिशत है, लेकिन भविष्य में इनकी संख्या में वृद्धि देखने को मिल सकती है। अत: बौद्ध धम्म हरियाणा की संस्कृति एंव धर्म का अभिन्न अंग रहा है। यह सदैव मानव के कल्याण हेतु मैत्री, करुणा, दान, शील, प्रज्ञा, अहिंसा, शांति, आदि की शिक्षा देता है। जिसका अनुशरण कर मनुष्य सुख-शांति से अच्छा जीवन व्यतीत कर सकता है।

Abstract

The entry of Buddha dhamma in kuru region and the historical significance

During the time of the Lord Buddha, India was known as Jambuudvip. It was segregated into sixteen small Mahajanapada's. Among these mahajanpad's 'Kuru' was an important janpada. At present its part comes under Haryana and Uttar Pradesh. Description in the Kurudhamma jataka states that people of that region strictly practicing the five precepts and Far from far away, they were very prestigious for their knowledge and generosity. Seeing such fame, people from other nations used to learn Dhamma from them. Lord Buddha himself given Very intellectual and harmonious sutta's to convert people into Buddh dhamma.

This short research is divided into four chapters. In its first chapter there is a small description of 'Kuru region and the first sixteen Mahajanapadas of Buddha's time. Apart from that the geographical background of Kuru region has been described in detail And also there is a description about the admission of Buddh dhamma in Kuru region. The descriptions in Pali Tipitaka state that After eleven years of getting enlightment, lord Buddha himself came to Kuru region while begging alms with Buddhist monk. At that time there were two very famous cities 'Kamsasadhham' and 'Thulkotthit'. When Lord Buddha came to Kuru region, he used to stay in a forest area near Kammasadhham. Now it is known from the village called 'Kamaspur' and there are different opinions of scholars about Thullkotthit. D.C. Ahir has compared Thullkotthit with 'sthaneswar'. And Bhardwaj admits the 'Thol' and 'Kuradi' villages of modern Kurukshetra.

The second chapter is about 'the teachings of Lord Buddha in Kuru region'. In this chapter an attempts has been made to collect the different sutta which is preached by lord budhha in kuru region and show their historical significance. This

study shows that Lord Buddha traveled four times in Kuru state during his life time and he has preached Six important suttas such as Mahasatipattanasut, Annjasappasututta, MahanidanSutta, Magandiyasutta, Sammasasutta and Rattpalasutta, of these, five of them were given in 'Kamsasadhham' and 'Thulkotthit' respectively. Historically these Sutta's have great importance. In these we can get detailed description about the religious, social, economic, geographical and cultural conditions of Buddhist society. In addition to this we can also get description about the arrival of Lord Buddha, his famous contemporary kings, Major monks, Trade route and commerce center.

Apart from this one can also get Information about ancient cities, and Rajpaths which has spread far and wide. At the time of Lord Buddha, the king named Kaushya ruled here. Resident of kuru region such as Rattpal, Magandiye, Thari Nanduttara and Thari Mittakali, had attained qualification after receiving permission from the Buddhist Union. Lord Buddha's chief disciple, Stavir Anand, Sthavir Sariputta, Sthavir Moggalan and Buddha's famous Vaidya Jivakak they also visited the Kuru region and spread the teachings of Buddha. As a result of that here Buddha Dhamma grew rapidly during the time of Buddha.

The importance of these teachings increases even further when it connects with the philosophy and science, and it embellishes and beautifies the life of a human. And it shows Displays the path of Nirvana to free him from grief, distress, pain, anxiety and craving and so on.

In the Third chapter 'The historical importance of ancient Buddhist remains of Kuru region Four ancient Buddhist sites of Haryana derived from excavation carried out by the Archaeological Survey of India (Adibadri Buddhist Stupas and Vihar, Chaneti Buddhist Stupa, Agroha Buddhist Stupa, Buddhist Stupa Kurukshetra) Along with this, modern Dhamapattan Pagoda Kamasadhhamm has

been included. Studying the facts of these sites shows that Remnants are also very important in terms of architecture and art as well as from historical perspective.

The evidence of their ancientity exposes this to us that today, almost 2300 years ago; the whole of Haryana was full of Buddh dhamma. Mentioned in the travel details of Chinese traveler Yuan Chuang That at that time hundreds of thousands of Buddhist monks used to live in Buddhist Viharas. From this we can guess that till the reign of King Harshavardhana (seventh century) the Buddh dhamma was in very good condition, But after this, due to the growing influence of Hindu religion and external Muslim invasions, till the end of 12th, 13th century. Buddhist monasteries, stupas, and Buddha statues were demolished and the Buddhist monks were killed. Apart from this, a few Buddhist monks were left; they left this place and settled towards the Himalayas. As a result, Buddh Dhamma gradually collapsed from here.

In the fourth chapter' The present situation of Buddhist dhamma in Haryana' has been studied. In modern Haryana, the beginning of 'Buddhist Dharma' was started, When Baba Saheb Dr. Bhimrao Ambedkar had renounced Hinduism with the five lakh followers at 'Diksha Bhoomi' located in Nagpur on October 14, 1956 and embraced humanist Buddha dhamma. Like the other states of India, the impact of this Dharma revolution has started to appear a little bit on the Bahujan Samaj of Haryana. According to the figures of religious census 2011 issued by the Government of India Here the population of Buddhists is 7,514.

Hence the above statement is certified that the Kuru region has been an important center of Buddh dhamma. The teachings given by Lord Buddha on here and Buddhist remnants from archeology and excavations Certify this thing that. From the sixth century to the twelfth-thirteenth century the Buddhist dhamma was presented, currently, the number of people who believe in Buddhism is 0.02

percent, but in the future, their number may increase. Hence Buddha Dhamma is an integral part of Haryana's culture and religion. It always teaches for friendship, compassion, charity, wisdom, non-violence, peace, and so on for the welfare of mankind. By following it, one can lead a good life in peace and happiness.